RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 नवम्बर 2021

मेरा पन्ना विशेषांक

बाल विज्ञान पत्रिका, नवम्बर 2021

चकमक

मूल्य ₹50

मेरा पन्ना विशेषांक

इस अंक के लेखकः

आराध्या मल्होत्रा, जागृति कुम्भार, कविता, जयन्ती फर्स्वाण, नील चड्ढा, लारण्या, खनक जगत, पवन, गरिमा, केसर देवी, आयुष कुमार पाण्डेय, दर्शन, तनिषा गिडवानी, यक्षम शर्मा, सचिन नेगी, मानम चन्द्रा, सोफिया, निकिता मनकोटी, सविता यादव, अनुष्का घाटगे, शिक्षा, आकांक्षा, कविता, शाहीन, पायल, पलक, होमन, शेषकुमार, मनीषा, लाडो, शिवशंकर, एमन, तृप्ति, रुचिका, दानेश, तारणी, सम्मा, डागेश्वर, इमरान, रोशनी, प्रीति, हुलेश, कृष्ण, आकांक्षा, ऋतु, मनीषा, जुगनू, कविता, फ़िज़ा शेख, प्रिशिका, रजनी, देवांश, रक्षा, सूफियान, आँचल उइके, अदिति कौण्डल, अंजलि, दीक्षा, निहारिका, सलोनी चौहान, ललित, संजीवनी, तनिष्क, अंजलि, रयाना, कविता चिचाम, सचिन, लावण्या कंसल, अवनि सिंह, देवस्या, अंकित, मनोज धुर्वे, टी एम सहाना, झीलम पात्रा

इस अंक के चित्रकारः

रिया उपाध्याय, प्राजक्ता काकड़े, आस्था, निला, नवजोत, अर्जुन चावला, आरोष सरकार, तनिषा गिडवानी, सविता यादव, प्रज्ञा गांधी, रजनी, खुशबू मेहरा, सिमरन असवाल, हिमाक्षी भट्ट, कुशाल कौशिक, सरुपी, रजनी, झीलम पात्रा, आमना शेख, आयुष चौधरी

हर साल नवम्बर का अंक 'मेरा पन्ना विशेषांक' होता है। यह अंक खास इसलिए होता है क्योंकि यह तुम सब की रचनाओं से भरपूर होता है। हर साल की तरह इस साल भी हमने तुम सब से इस अंक के लिए खास तौर पर रचनाएँ मँगवाई थीं – कोई भी चित्र, किस्सा, कहानी, मज़ेदार चुटकुले, पहेलियाँ आदि। साथ ही हमने कुछ खास विषयों पर भी तुमसे सामग्री मँगवाई थी – तुम्हारे कौन-से बहाने काम कर गए, रोज़मर्रा के जीवन में मदद करने वाले किसी व्यक्ति का इंटरव्यू और बड़ों ने तुम्हें कैसे डराया।

इन सभी विषयों पर तुमसे ना सिर्फ ढेर सारी लिखित सामग्री, बल्कि एक से बढ़कर एक चित्र भी मिले। तुम्हारी भेजी इन सुन्दर रचनाओं से ही हम इस खास अंक को तैयार कर पाए हैं। इतनी सारी रचनाओं को एक ही अंक में शामिल कर पाना सम्भव नहीं था। इसलिए इन विषयों पर कुछ सामग्री तुम्हें अगले अंक में भी पढ़ने को मिलेगी।

तुम सब को हमारा ढेर सारा प्यार,

चकमक टीम

अंक 422 ● नवम्बर 2021

चकमक

इस बार

मेरा पन्ना – 4

मुझे कलर्स के बारे में क्या लगता है – 8

माथापच्ची – 10

बहाना जो काम कर गया – 12

मेरा पन्ना – 18

बातचीत – 19

मुझे खाने को चूहा कब मिलेगा – 22

मेरा पन्ना – 27

जब हमारे अपने ही हमें डराएँ... – 28

मेरा पन्ना – 34

अन्तर ढूँढ़ो – 35

मीरा की चिट्ठी – 36

भूलभुलैया – 38

चित्रपहेली – 40

भूलभुलैया – 43

सम्पादक
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी

सहायक सम्पादक
मुदित श्रीवास्तव

सम्पादन सहयोग
सजिता नायर

वितरण
झनक राम साहू

डिज़ाइन
कनक शशि

डिज़ाइन सहयोग
इशिता देबनाथ बिस्वास

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

आवरण चित्र: कुणाल घोष, बारह वर्ष, कोलकाता बाल भवन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क
(रजिस्टर्ड डाक सहित)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी
accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
फोन: +91 755 2977770 से 3 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

चित्र: रिया उपाध्याय, ग्यारहवीं, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

याद आती है

आराध्या मल्होत्रा
दूसरी, शिव नाडर स्कूल
नोएडा, उत्तर प्रदेश

मुझे मेरे स्कूल की याद आती है
याद मेरे चेहरे पर मुस्कान लाती है
काश मैं उनके साथ खेल सकती, स्कूल जा पाती
यह सोचकर उदासी छा जाती है
बाहर खतरा है माँ जाने नहीं देतीं
फिर भी याद आती है

मेरा पन्ना

चित्र: प्राजक्ता काकड़े, चौथी, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

ऑनलाइन पाठशाला

जागृति कुम्भार
पाँचवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान
फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

हमारी ऑनलाइन पाठशाला है शुरू
बिलकुल भी उसमें नहीं मज़ा, क्या करूँ

जब याद करती हूँ हमेशा की पाठशाला
बच्चे दिखते हैं झूलते हुए झूला

लाइब्रेरी की किताबें बिलकुल अकेली पड़ गईं
पूछती होंगी, “बच्चे नज़र क्यों आते नहीं?”

फलक और बैंच सूनी कक्षा से बेज़ार
सोचें कब लौट आएगा बच्चों का शोर फिर एक बार

मेरा पन्ना

राजा-रानी

कविता
पाँचवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल
बाड़मेर, राजस्थान

एक कहानी थी
राजा-रानी थे
रोते-रोते सोते थे
बैठे-बैठे रोते थे

अप्पू के कंचे

जयन्ती फर्स्वाण
नौवीं, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी
अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

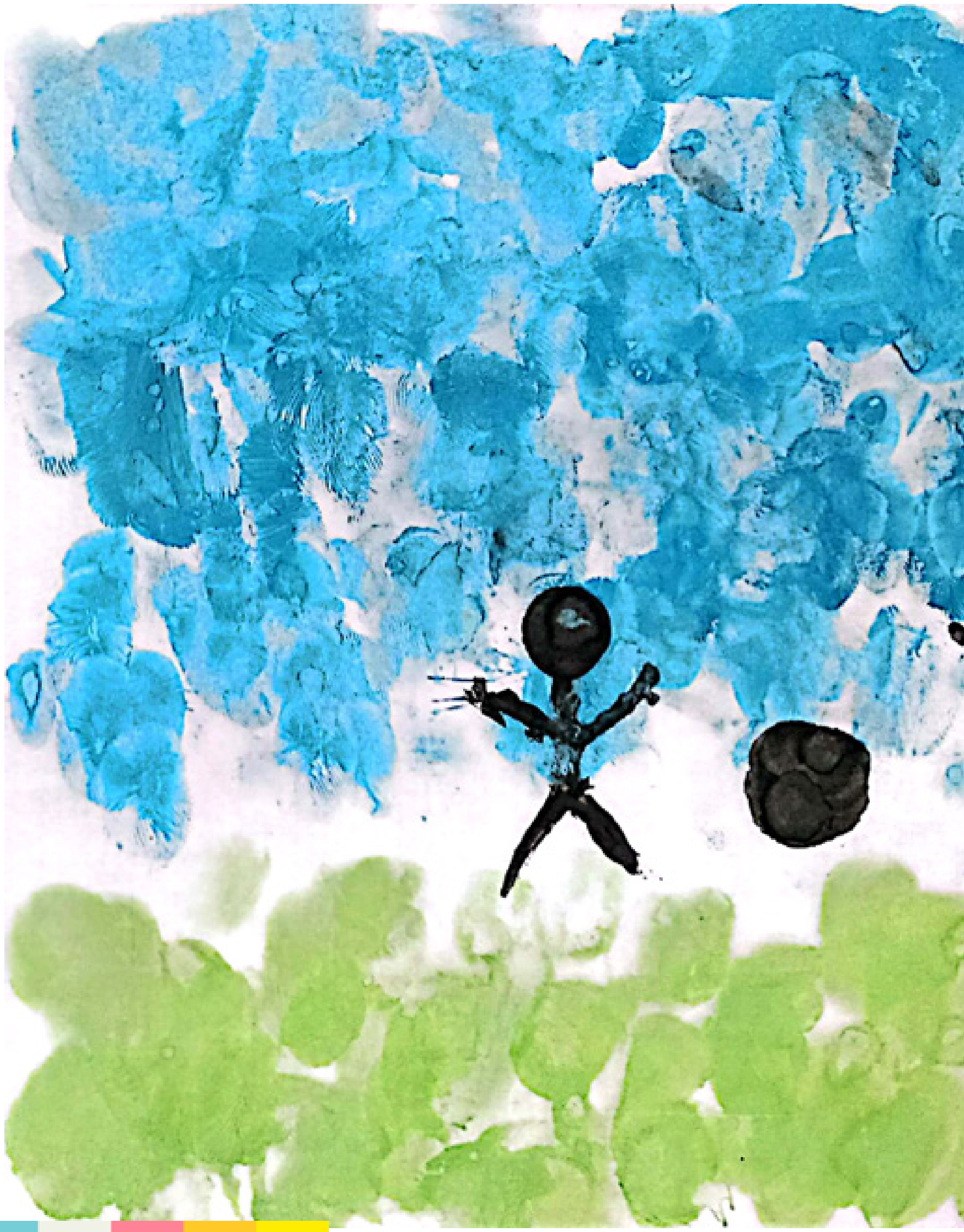

अप्पू एक लड़का था
कंचे उसे पसन्द थे
कंचों के साथ खेलता था

गोल-गोल कंचा
गोल-गोल अप्पू
स्कूल की घण्टी बजती
तो दौड़ लगाकर जाता था

स्कूल में टीचर पढ़ाते थे
कंचों के सपने में रहता था
अप्पू एक लड़का था

कोरोना के बाद स्कूल

नील चड्ढा
आठवीं, डीपीएस इंटरनेशनल स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

चित्र: आस्था, आठवीं, मंगलम पब्लिक स्कूल महादेव, सुन्दर नगर, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

ऑनलाइन स्कूल करके मैं बहुत ऊब और थक गया था। लेकिन आज के दिन आखिरकार मैं असल में स्कूल गया। लेकिन हर चीज़ वैसी नहीं थी जैसे मैंने सोची थी। कोरोना के पहले मैं स्कूल बस में अपने दोस्तों के साथ बैठकर बातें करता था, लेकिन कोरोना से सुरक्षा के लिए हमें अलग-अलग बैठना पड़ा। इस वजह से हम अपने-अपने किस्से भी नहीं सुना पाए।

जब मैं स्कूल पहुँचा तो सबसे पहले एक लम्बी लाइन लगी थी सबका तापमान देखने के लिए। अगर किसी का तापमान 95 से ऊपर था, तो वह अन्दर नहीं जा सकता था। लेकिन ऐसा किसी के साथ नहीं हुआ। स्कूल में आकर अपने दोस्तों से मिलकर मैं बहुत खुश हो गया और उनसे बातें करने लगा। लेकिन टीचर हमें जल्दी से अलग करके बोले, "ज़्यादा पास मत आना।" और हम क्लास में चले गए।

क्लास में भी बस जैसा ही हाल था। सबको अलग-अलग बैठना था और ज़्यादा बातें करना मना था। लेकिन स्कूल की पढ़ाई ऑनलाइन क्लास से ज़्यादा बेहतर लगी। क्योंकि ध्यान बँटाने के लिए आसपास कोई चीज़ नहीं थी।

यह अनुभव बुरा नहीं था। लेकिन मुझे लगा था कि दोस्तों से मिलने और बातें करने का मौका मिलेगा। फिर भी यह ऑनलाइन क्लास से तो बहुत ज़्यादा अच्छा था।

मेरा पन्ना

मुझे कलर्स के बारे में क्या लगता है

लारण्या
दूसरी, शिक्षान्तर स्कूल
गुरुग्राम, हरयाणा

चित्र: अमृता

ब्लू रंग मुझे शान्ति का एहसास दिलाता है। पानी का रंग ब्लू है और लहरों की आवाज़ भी मुझे शान्ति का एहसास दिलाती है।

ग्रीन कलर मेरे लिए खुशी का एहसास है। मैं खुश होती हूँ जब मैं प्रकृति के करीब होती हूँ। जब बारिश होती है तो मुझे पेड़ों को देखना अच्छा लगता है।

जब मैं गुस्से में होती हूँ तो मैं रेड कलर को देखती हूँ।

जब मैं दुखी होती हूँ तो मुझे ब्राउन कलर और अकेलेपन का एहसास होता है। कभी-कभी मैं रोती हूँ और फिर मुझे बेहतर महसूस होता है।

अपने जन्मदिन पर मैं पिंक महसूस करती हूँ। तब मैं जो चाहे कर सकती हूँ।

मेरा सबसे कम पसन्दीदा कलर ब्लैक है। ब्लैक कलर की बिल्ली से मुझे डर लगता है।

माथापच्ची

1. दो अंकों की एक ऐसी संख्या है जो अपने अंकों के जोड़ के तीन गुनी है। ज़रा बताओ तो कौन-सी संख्या है वह?

2. अर्शी को याद है कि सारा का जन्मदिन पक्के तौर पर 15 दिसम्बर के बाद और 20 दिसम्बर से पहले पड़ता है। रेहान को याद है कि सारा का जन्मदिन पक्के तौर पर 18 दिसम्बर के बाद और 22 दिसम्बर से पहले पड़ता है। क्या तुम बता सकते हो कि सारा का जन्मदिन किस दिन पड़ता है?

3. 2 को चार बार उपयोग करके 23 लाना है। कैसे करोगे? तुम जोड़, घटाव, गुणा और भाग के चिह्नों का इस्तेमाल कर सकते हो।

आँखें दो हों या हों चार
मेरे बिना कोट बेकार

(बटन)

(राजन, पाँचवीं, अपना स्कूल तातियागंज, कानपुर, उत्तर प्रदेश से प्राप्त)

देह सख्त है पत्थर जैसी, ऐसी है वह रानी
पर इतनी शर्मीली हाथ में लेते ही,
होती पानी-पानी

(बर्फ)

4.

ज़रा बताओ तो कि खाली जगहों में कौन-से टुकड़े आएँगे?

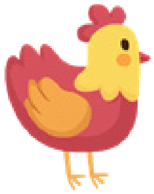

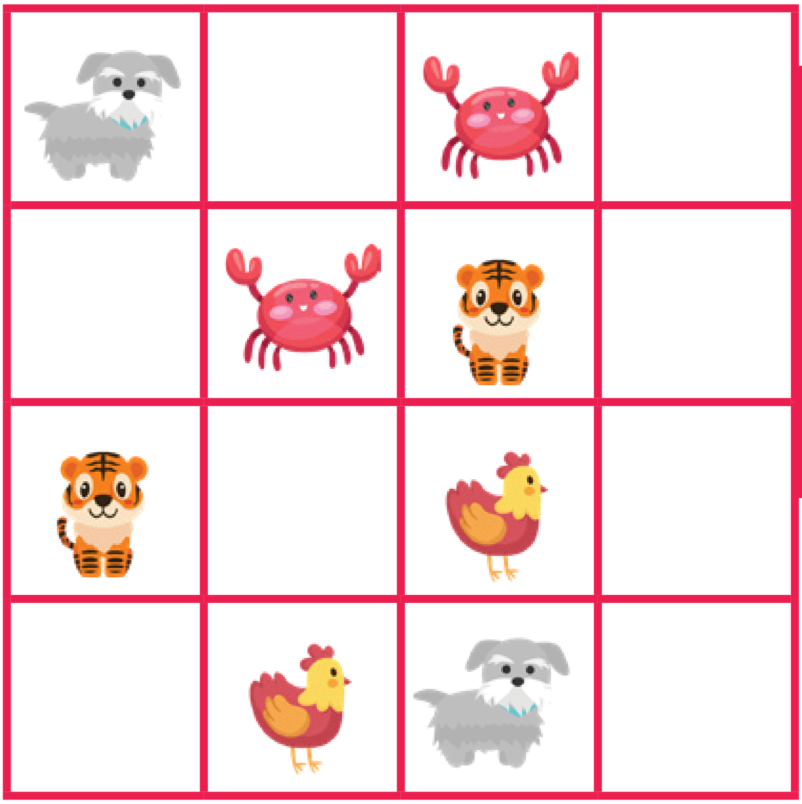

5.

दिए गए चित्र की हर पंक्ति व हर कॉलम में एक कुत्ता, एक केकड़ा, एक बाघ और एक मुर्गा होना चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-से जानवर आने चाहिए?

6.

सभी खाली जगहों में एक ही शब्द आएगा। बताओ तो कौन-सा?

एक .... औरत .... पर बैठकर .... गीत गा रही थी। उस .... से दूर-दूर तक .... ही दिखाई देती थी।

7.

नीचे दिए गए संकेतों के आधार पर तीन अंकों का कोड क्रैक करो और ताला खोलो।

182 - इनमें से एक अंक सही है और सही स्थान पर है।

416 - इनमें से एक अंक सही है लेकिन गलत स्थान पर है।

214 - इनमें से दो अंक सही हैं लेकिन दोनों गलत स्थान पर हैं।

718 - इनमें से कोई भी अंक सही नहीं है।

087 - इनमें से एक अंक सही है और सही स्थान पर है।

कौन-सा टेबल है जिसके पैर नहीं होते?

(टाइम टेबल)

एक बुढ़िया के बेटे बारह,
उनके बेटे पाँच-पाँच
पूरा कुनबा साठ का,
बुढ़िया का घर काँच का

(घड़ी)

अन्त कटे तो दूसरा बन जाती
चाय व सब्ज़ी का स्वाद बढ़ाती

(अदरक)

सो जाओ तो गिर जाती हैं
जागो तो उठ जाएँ
वैसे पल-छिन गिरतीं-उठतीं
बोलो क्या कहलाएँ

(पलकें)

समाचार को तीन अक्षरों में कैसे लिखोगे?

([illegible])

एक दिन मुझे चिप्स खाना था। घर पर रखे थे। पर वो कच्चे थे। तो मुझे तलने पड़ते। पर सब घर पर थे और टीवी देख रहे थे। मैंने टीवी हिला दी और टीवी की आवाज़ चली गई। मैंने बोला कि टीवी की आवाज़ तो चली गई। अब टीवी देखने में मज़ा नहीं आएगा। चलो बाहर बैठने। फिर सबके साथ बाहर गई। थोड़ी देर में मैंने बोला कि मुझे पॉटी आ रही है और घर आ गई। फिर मैंने गैस जलाई और मंजू और मैंने चिप्स तलकर खाए। और बरतन माँजकर रख दिए और खेलने चली गई।

खनक जगत, ग्यारह साल, जीवन शिक्षा पहल, मुस्कान संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश

मैंने मम्मी से बोला पाँच रुपए दो। पेंसिल लेकर आऊँगा। फिर मैं दुकान जाकर बिस्किट लेकर आया। मैंने मम्मी को उल्लू बना दिया।

पवन, पाँचवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, बाड़मेर, राजस्थान

चित्र: निला, पहली, द संस्कार वैली स्कूल, भोपाल, मध्य प्रदेश

बहाना जो काम कर गया

इस अंक के लिए हमने बच्चों से कहा था कि वो उनके द्वारा बनाए गए किसी ऐसे बहाने के बारे में लिखें, जो काम कर गया हो।

वैसे बड़े भी बहाने बनाते हैं, लेकिन बचपन में हमें बहाने बनाने की ज़्यादा ज़रूरत पड़ती है। शायद इसलिए क्योंकि बच्चों के विचारों को अक्सर अहमियत नहीं दी जाती है। कहाँ-कैसे बैठना-खड़ा होना है, क्या और कितना खा सकते हैं, कब खेल सकते हैं — हर चीज़ बड़े इनके लिए तय करते हैं। तो जब पता हो कि बड़े बात नहीं मानने वाले तो बहाना बनाकर बच्चे अपनी मर्ज़ी से कुछ कर लेते हैं।

बच्चों के बहाने अक्सर दूसरों को नुकसान नहीं पहुँचाते हैं। फिर भी पता चलने पर कई बार बड़े गुस्सा करने लगते हैं। हाँ अगर बाल कृष्ण सी किस्मत हो तो खता जो भी हो नटखट समझकर बड़े हँस भी देते हैं।

फिलहाल बच्चों के भेजे दिलचस्प जवाबों से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो।

एक दिन लक्षिता को लकड़ी वाले कलर चाहिए थे और मेरे को नहीं देने थे। मेरे को लगा कि लक्षिता घर आकर ले लेगी तो मैंने कलर छुपा दिए। और अब मेरे को ही नहीं मिल रहे हैं।

गरिमा, पाँचवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, बाड़मेर, राजस्थान

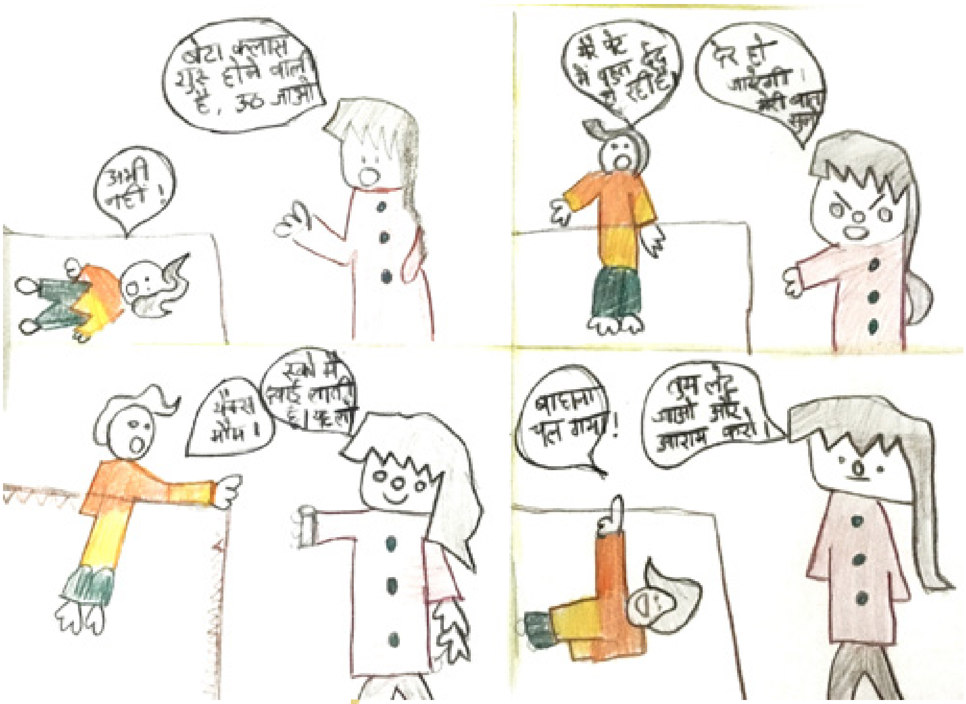

चित्र: अर्जुन चावला, तीसरी, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

चित्र: नवजोत, आठवीं, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

एक बार मुझसे काँच का गिलास टूट गया था। मैंने सोचा कि अब मुझे डाँट पड़ेगी। तो मैंने डाँट से बचने के लिए अपनी मम्मी से बहाना बनाया कि चूहे ने गिलास तोड़ दिया है।

केसर देवी, दसवीं, अपना स्कूल, मुरारी सेंटर, कानपुर, उत्तर प्रदेश

मुझे मोबाइल फोन में वीडियो गेम खेलना पसन्द है। एक बार मैं अपने दोस्त के फोन से वीडियो गेम खेल रहा था। घर गया तो मम्मी डाँटने लगीं कि कहाँ गया था। तो मैं बोला कि मुझे पास वाली आंटी मार्केट भेज दी थीं। तो मम्मी मुझे डाँटने के बजाय शाबाशी देने लगीं। क्योंकि मम्मी बोली थीं कि दूसरों की मदद करनी चाहिए तो यह बहाने के कारण मैं गेम भी खेला और शाबाशी भी मिली।

आयुष कुमार पाण्डेय, आठवीं, ग्राम गोठी, परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार

एक बार मेरे पापा ने मुझे कहा कि जा ज़रा खेत पर जाकर देख आ। तो मैंने कह दिया कि मेरे पैर में काँटा लगने की वहज से अँगूठा सूज गया है। असल में मैं पैदल नहीं जाना चाहता था तो मैंने यह बहाना बनाया। तो पापा ने कहा, “ले, गाड़ी ले जा। और जल्दी आ जाना।” तो इस तरह मेरा पैदल नहीं जाने का बहाना काम कर गया।

दर्शन, नौवीं, देवास, मध्य प्रदेश

चित्र: आरोष सरकार, तीसरी, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

यह हमारी परीक्षाओं के दौरान या उसके आसपास के समय की बात है जब मैंने यह पेंटिंग बनाई। मैं पढ़ाई कर-करके बहुत बोर हो गई थी और थक गई थी तो मैंने अपने घर के बड़े लोगों को कहा कि मैं अपने कमरे में पढ़ाई कर रही हूँ जबकि असल में मैं यह पेंटिंग बना रही थी। यह बहाना बनाने का मुझे कोई पछतावा नहीं है क्योंकि उस समय इससे मुझे रिलेक्स मिला और मैं अपनी पढ़ाई पर बेहतर रूप से ध्यान दे पाई।

मुझे अक्सर लगता है कि पढ़ाई के प्रेशर के चलते हम ऐसी चीज़ें करना भूल जाते हैं जो हमें सच में खुशी देती हैं। और जीवन में एक सुकून का एहसास देती है। परीक्षा के दौरान रिलेक्स करना भी उतना ही ज़रूरी है, जितना कि रिर्पोट कार्ड में अच्छे मार्क्स लाना।

मुझे झूठ बोलना पड़ा और बहाना बनाकर रिलेक्स करना पड़ा पर ऐसा नहीं होना चाहिए। हमें एक ब्रेक तो मिलना ही चाहिए खासकर तब जब स्कूल-कॉलेज में परीक्षाएँ चल रही हों।

तनिषा गिडवानी, दसवीं, सेंटर पॉइंट स्कूल, नागपुर, महाराष्ट्र

चित्र: तनिषा गिडवानी, दसवीं, सेंटर पॉइंट स्कूल, नागपुर, महाराष्ट्र

मैंने होमवर्क टालने के बहाने बनाए हैं, लेकिन ज्यादातर समय वे काम नहीं करते। यहाँ एक बहाना है जो मैंने होमवर्क से बचने के लिए किया। मैंने अपने शिक्षक से कहा कि मेरा टीम एप काम नहीं कर रहा है और मैं असाइनमेंट नहीं दे सकता। मैंने अपने माता-पिता से भी होमवर्क टालने का बहाना बनाया। मैंने उनसे कहा कि मैं गिटार की प्रैक्टिस कर रहा था लेकिन वास्तव में मैं खेल खेल रहा था। ये तो बस कुछ बहाने हैं जो मैंने काम से बचने के लिए बनाए हैं। लेकिन जैसा कि मैंने पहले कहा इनमें से ज़्यादातर काम नहीं करते।

यक्षम शर्मा, आठवीं, डीपीएस इंटरनेशनल स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

एक बार की बात है। मुझे मम्मी के साथ पौड़ी जाना था। हम तैयार होकर बस में बैठ गए। मुझे पता था कि मम्मी मोबाइल घर पर छोड़ गई हैं। मैंने अचानक सिर दर्द का बहाना बनाया। मम्मी ने घर की चाबी दी और आराम करने के लिए कहा। एक ही बस पौड़ी जाती है और वही डेढ़ बजे लौटती है। मैंने घर में मोबाइल पर खूब मस्ती की। मम्मी ने किसी दूसरे के मोबाइल से फोन किया। मैंने फोन उठाया। मम्मी को तसल्ली हो गई कि मोबाइल घर में छूटा है। मम्मी शाम को लौटीं। मैंने मम्मी के आने से पहले मोबाइल चार्ज कर वहीं रख दिया, जहाँ वह छूटा था।

सचिन नेगी, दसवीं, राजकीय इंटर कॉलेज, केवर्स,
पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

जब मैं छोटा था और कक्षा एक में पढ़ता था। तब स्कूल नहीं जाना चाहता था तो माँ जब कपड़े पहनातीं मैं उनको बोलता मैं आपको छोड़कर स्कूल नहीं जा सकता। मैं आपसे बहुत प्यार करता हूँ।

मानम चन्द्रा, तीसरी, शिवनाडर स्कूल,
नोएडा, उत्तर प्रदेश

हमारे घर पर साड़ियों पर मोती लगाने का काम किया जाता है। इस काम को करने में मुझे बहुत ही ज़ोर आता है। शुरुआत में तो मुझे बहुत मज़ा आता था। लेकिन अब यह रोज़ का ही काम हो गया तो मुझे ज़ोर आने लगा। एक दिन मेरी मम्मी ने कहा कि यह साड़ी थोड़ा जल्दी-से देना है तो तुम सब मिलकर इस साड़ी के मोती लगवा दो। मुझे उस दिन बहुत ही ज़ोर आ रहा था तो मैंने पानी पीने का बहाना बनाया और पानी पीने के बजाय मैं चाचा के घर पर जाकर टीवी देखने लग गई। इस प्रकार मैंने साड़ी के मोती लगाने से अपने आप को बचाया।

सोफिया, मेंहदी समूह, दिगन्तर विद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

बरसात के मौसम में मैं उन सभी जगहों पर काम करने से बचना चाहती हूँ जिनमें जौंक का खतरा हो या जहाँ पर अधिक नमी रहती हो। क्योंकि नमी वाले स्थानों में बहुत प्रकार के कीड़े या जौंक लगती हैं। और मैं जौंकों से बहुत अधिक डरती हूँ। इसलिए मैं उन बाहरी कामों से बचने का बहाना ढूँढ़ती हूँ जिनमें जौंकों का भय रहता है।

एक बार मौसम बरसात का था और मुझे घास काटना था। बाहर का वातावरण काफी नम था क्योंकि पिछली रात अच्छी बारिश हुई थी। मुझे हिम्मत नहीं हुई कि मैं जौंकों से संघर्ष कर सकूँ। इसलिए मैंने सिर दर्द का बहाना बनाया। वैसे तो हल्का-सा सिर में दर्द था, पर इतना नहीं था कि मैं घास ना काट सकूँ। खैर मेरा बहाना काम कर गया और मैं जोंकों से संघर्ष करने से बच गई।

निकिता मनकोटी, बारहवीं, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

दीवाली का त्योहार आने वाला था। इसलिए मम्मी हम लोगों को कपड़ा दिलवाने बाज़ार ले गईं। एक बड़े-से मॉल में हम लोग गए। वहाँ बहुत-से कपड़े देखे। मुझे बहुत अच्छा लगा।

मम्मी ने मेरे लिए गुलाबी रंग की झालर वाली एक फ्रॉक पसन्द की। मुझे जीन्स-टॉप पहनने का बहुत मन था। पर मुझे लगता था कि मम्मी यह नहीं खरीदेंगी। तो मैंने मम्मी से बताया कि दीवाली की छुट्टी के बाद “बलरामपुर महोत्सव” होगा जिसमें मेरे स्कूल की टीम भी जाएगी और ‘चक दे इंडिया’ गाने पर डान्स होगा। सबको जीन्स और टॉप ही पहनना है। तो फिर से ड्रैस लेनी पड़ेगी।

मम्मी ने कहा, “ठीक है। मैं स्कूल की मैम को पूछती हूँ।” ऐसा कहकर उन्होंने तुरन्त फोन मिला दिया। मैं डर गई। भगवान करनी फोन नहीं मिला तो मम्मी ने वही ड्रैस दिलवा दी। मुझे बहुत खुशी हुई।

सविता यादव, पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय धुसाह - प्रथम, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

चित्र: सविता यादव, पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय धुसाह - प्रथम, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मेरा पन्ना

चित्र: प्रज्ञा गांधी, तीसरी, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

हाथी

अनुष्का घाटगे
छठवीं
प्रगत शिक्षण संस्थान
फलटण, सतारा
महाराष्ट्र

जब मैं मेरे पापा के दोस्त के घर जा रही थी तब रास्ते में हमें एक हाथी दिखा। वह बहुत बड़ा था। मैं और मेरा भाई उसके पास गए। मेरे भाई ने उसको हाथ लगाया। पहले मुझे थोड़ा डर लगा। बाद में मैंने भी उसको हाथ लगाया। जब हम पापा के दोस्त के यहाँ से जाने के लिए गाड़ी पर बैठे उसने सूँड ऊपर की, जैसे कि वह हमें अलविदा कह रहा था।

मेरी गाय लालो

शिक्षा
तीसरी, रीडिंग प्रोग्राम मेंदुआ
भोपाल, मध्य प्रदेश

एक बार मैं लालो को खुजली कर रही थी। तब उसने ज़ोर-से डकार ली तो मैं बहुत हँसी। ऐसे हँसी कि मेरी हँसी रुक ही नहीं रही थी। फिर मैंने उसे थोड़ी देर और खुजली की। और फिर मैं खेलने चली गई। लालो चार साल की है। वो लाल रंग की है। मेरी और उसकी बहुत अच्छी दोस्ती है।

बातचीत

हमारे रोज़मर्रा के जीवन के कुछ मददगार लोगों से

रोज़मर्रा के जीवन में हमारी अलग-अलग तरह से विविध लोग मदद करते हैं। हमने सोचा कि क्यों ना हम इनके बारे में थोड़ा और जान लें। सो इस अंक के लिए हमने बच्चों को ऐसे कुछ लोगों का इंटरव्यू करने के लिए कहा था। हमें भेजे गए इंटरव्यू में से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो।

चित्र: कुशाल कौशिक, छह साल, भोपाल, मध्य प्रदेश

लोकेश भैया

आकांक्षा व कविता, छठवीं
शाहीन, पायल, पलक, होमन, शेषकुमार, मनीषा, लाडो, शिवशंकर, एमन, तृप्ति, रुचिका, दानेश व तारणी, सातवीं
शहीद स्कूल, बीरगाँव, छत्तीसगढ़

लोकेश भैया लोहे से सामान बनाने का काम करते हैं। वो इस काम को बारह-तेरह साल की उम्र से करते आ रहे हैं। वो हँसिया, छैनी, पहसुल, हथौड़ा, पाना, बरतन बनाने वाला साँचा बनाते हैं। लोकेश भैया लोहे को भनपुरी से 35 से 45 रुपए किलो में खरीदकर लाते हैं। इस काम को करना उन्होंने अपना मामा से सीखा।

उन्हें इस काम को करना ठण्ड के मौसम में अच्छा लगता है। क्योंकि लोहे को आग में गरम करके पीटकर सामान बनाना होता है। इसलिए गर्मी में इस तरह का काम करना मुश्किल होता है। इस काम को बहुत ध्यान से करना होता है। यदि ध्यान ना दिया जाए तो जलने और चोट लगने का डर होता है। एक सामान बनाने का डेढ़ सौ रुपए चार्ज करते हैं जब बनवाने वाले खुद लोहा लाकर देते हैं।

उन्हें अपने काम का सबसे अच्छा हिस्सा लोहे से सामान बनाना लगता है। इस काम से जो पैसे आते हैं उससे घर तो आसानी-से चल जाता है। पर बड़ी चीज़ें जैसे शादी या बीमारी होने पर इन कामों के लिए उधार लेना पड़ता है। अपने सामानों के ऑर्डर के हिसाब से उन्हें छैनी, हथौड़ी, सन्सी, गोबर, भट्टी आदि चीज़ों की ज़रूरत पड़ती है।

अलग-अलग मौसम के हिसाब से काम का ऑर्डर कम-ज़्यादा होता है। जैसे दीपावली के बाद हँसिया, छैने का बहुत ज़्यादा ऑर्डर मिलता है।

मेरा पन्ना

अखबार वाले इमरान से बातचीत

फ़िज़ा शेख
चाँदनी समूह
दिगन्तर विद्यालय
जयपुर, राजस्थान

फ़िज़ा: नमस्ते अंकल।

इमरान: नमस्ते बेटा।

फ़िज़ा: आपका नाम क्या है?

इमरान: मेरा नाम इमरान खान है।

फ़िज़ा: आपकी उम्र कितनी है?

इमरान: मेरी उम्र लगभग 35 साल है।

फ़िज़ा: आप अखबार बेचने का काम कब से कर रहे हो?

इमरान: मैं यह काम 2009 से कर रहा हूँ।

फ़िज़ा: आपने अखबार बेचने का काम क्यों शुरू किया?

इमरान: पहले मैं नगीने की घिसाई करने का काम करता था। वह धीरे-धीरे कम होने लगा। और एक दिन वह बन्द हो गया। तब मैंने दूसरा काम ढूँढ़ना शुरू किया। पर ज़्यादा पढ़ा-लिखा नहीं होने के कारण मुझे कोई काम नहीं मिला। फिर मेरे एक मित्र ने मुझे अखबार बेचने की सलाह दी। उस समय मेरे पास कोई काम नहीं था। इसलिए उसी समय से मैंने अखबार बेचना शुरू कर दिया।

फ़िज़ा: क्या अखबार बेचकर आप अपने परिवार का पालन-पोषण कर लेते हो?

इमरान: हाँ, मैं इस काम से अपना घर खर्च चला लेता हूँ।

फ़िज़ा: क्या यह काम आपको पसन्द है?

इमरान: हाँ, यह काम मुझे पसन्द है। जब लोग अखबार पढ़ते हैं और उन्हें देश-विदेश की जानकारियाँ मिलती हैं तो मुझे उन्हें देखकर खुशी मिलती हैं।

फ़िज़ा: आपका बहुत-बहुत धन्यवाद जो आपने मेरे साथ बातचीत की।

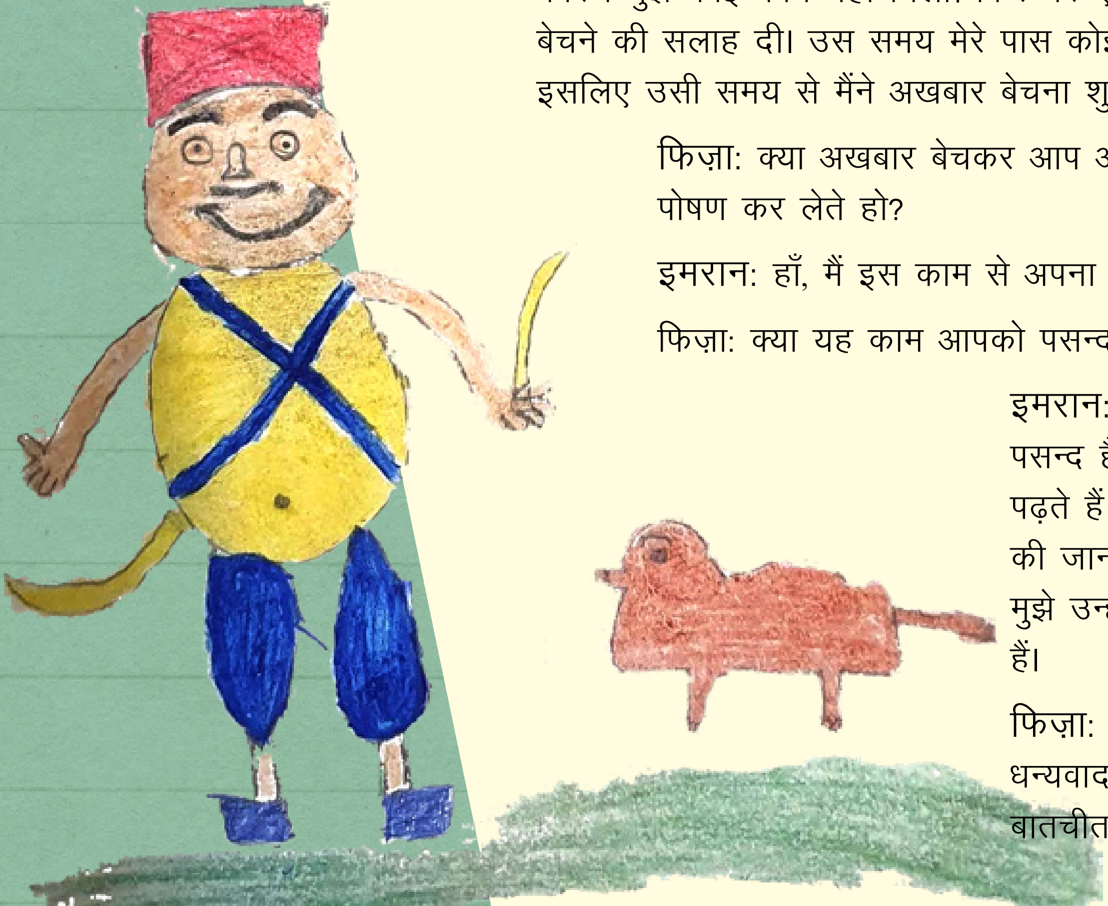

चित्र: सरुपी, पाँचवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, बाड़मेर, राजस्थान

तरह-तरह की मुश्किलें

प्रिशिका, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

प्रिशिका: आपका नाम क्या है?

अंकित: मेरा नाम अंकित है।

प्रिशिका: आप कब से दूध बेच रहे हो?

अंकित: मैं पिछले पाँच सालों से दूध बेच रहा हूँ।

प्रिशिका: क्या आपको यह काम अच्छा लगता है?

अंकित: हाँ मुझे दूध बेचना और गाय-भैंसों का खयाल रखना अच्छा लगता है।

प्रिशिका: आप और क्या-क्या बेचते हैं?

अंकित: दूध, पनीर, खोया, दही और सफेद मक्खन।

प्रिशिका: अगर आपको मौका मिले तो क्या आप कोई और काम करना चाहेंगे?

अंकित: हाँ, मैं फार्मा की तैयारी कर रहा हूँ। तो मैं केमिस्ट बनना चाहूँगा। मगर मुझे मेरी डेयरी का काम करना अच्छा लगता है।

प्रिशिका: किस तरह की मुश्किलें आईं कोरोना के दौरान?

अंकित: कुछ खास नहीं। सबने तब भी हमसे दूध लिया। बस हमें ज़्यादा सावधानी बरतनी पड़ती थी।

प्रिशिका: बातचीत करने के लिए धन्यवाद।

मेरा पन्ना

रामेश्वर भैया बिजली वाले

सम्मा, डागेश्वर, इमरान, रोशनी व प्रीति, पाँचवीं
हुलेश, कृष्ण, आकांक्षा, ऋतु, मनीषा, जुगनू व कविता, छठवीं
शहीद स्कूल, बीरगाँव, छत्तीसगढ़

रामेश्वर भैया बिजली बनाने (मरम्मत व फिटिंग) का काम करते हैं। वो पिछले बारह सालों से बिजली बनाने का काम कर रहे हैं। वो बिजली बनाने का काम बहुत अलग-अलग जगहों में किए हैं – घर, अस्पताल, ऑफिस, कॉम्प्लेक्स। अभी वो कम्पनी में बिजली बनाने का काम करने जाते हैं। पर उन्होंने बताया कि कम्पनी में बाकी जगहों से कम पैसे मिलते हैं। लेकिन कम्पनी में बिजली बनाने का नया-नया काम ज़्यादा सीखने को मिल रहा है। इसलिए वो कम्पनी में कम पैसे में भी काम कर रहे हैं ताकि नया काम सीखने के बाद बड़ा और ज़्यादा पैसों वाला काम मिल सके।

दस साल पहले जब वो अपना काम शुरू किए थे तब उन्हें एक महीने के अठारह सौ रुपए मिलते थे। ऐसे काम करते हुए धीरे-धीरे बढ़ते हुए अभी उन्हें एक महीने का लगभग दस हज़ार रुपए मिल जाता है। रामेश्वर भैया को पहले जो पैसा मिलता था उसमें उनका घर खर्च उठाना बहुत मुश्किल होता था। पर धीरे-धीरे पैसा बढ़ने पर घर की स्थिति में सुधार आया। बिजली बनाने का काम उन्होंने अपने गुरु और बिजली मिस्त्री से सीखा। पेंचिस, हथौड़ी, टेस्टर, आरी ब्लेड, कन्टिन्यूर, छैनी, होल्डर, वायर यह सारे सामान बिजली बनाने के लिए इस्तेमाल होते हैं।

मेरा पन्ना

मुझे खाने को चूहा कब मिलेगा!!

चित्र व कहानी: रजनी
पाँचवीं, मुस्कान संस्था
भोपाल, मध्य प्रदेश

एक बिल्ली अनाज के गोदाम में घुस गई। वहाँ उसने एक चूहा देखा।

वो झट-से चूहे के पीछे भागी और चूहा भी
झट-से भागा।

चूहा एक बिल में
घुस गया। बिल्ली
बिल के बाहर
उसका रास्ता
देखती रही।

रात हो गई। फिर भी बिल्ली
उसका रास्ता देखती रही।

बहुत रात हो गई। बिल्ली
रास्ता देखते-देखते सो गई।

चूहा बाहर आया और
दूसरे शहर चला गया।

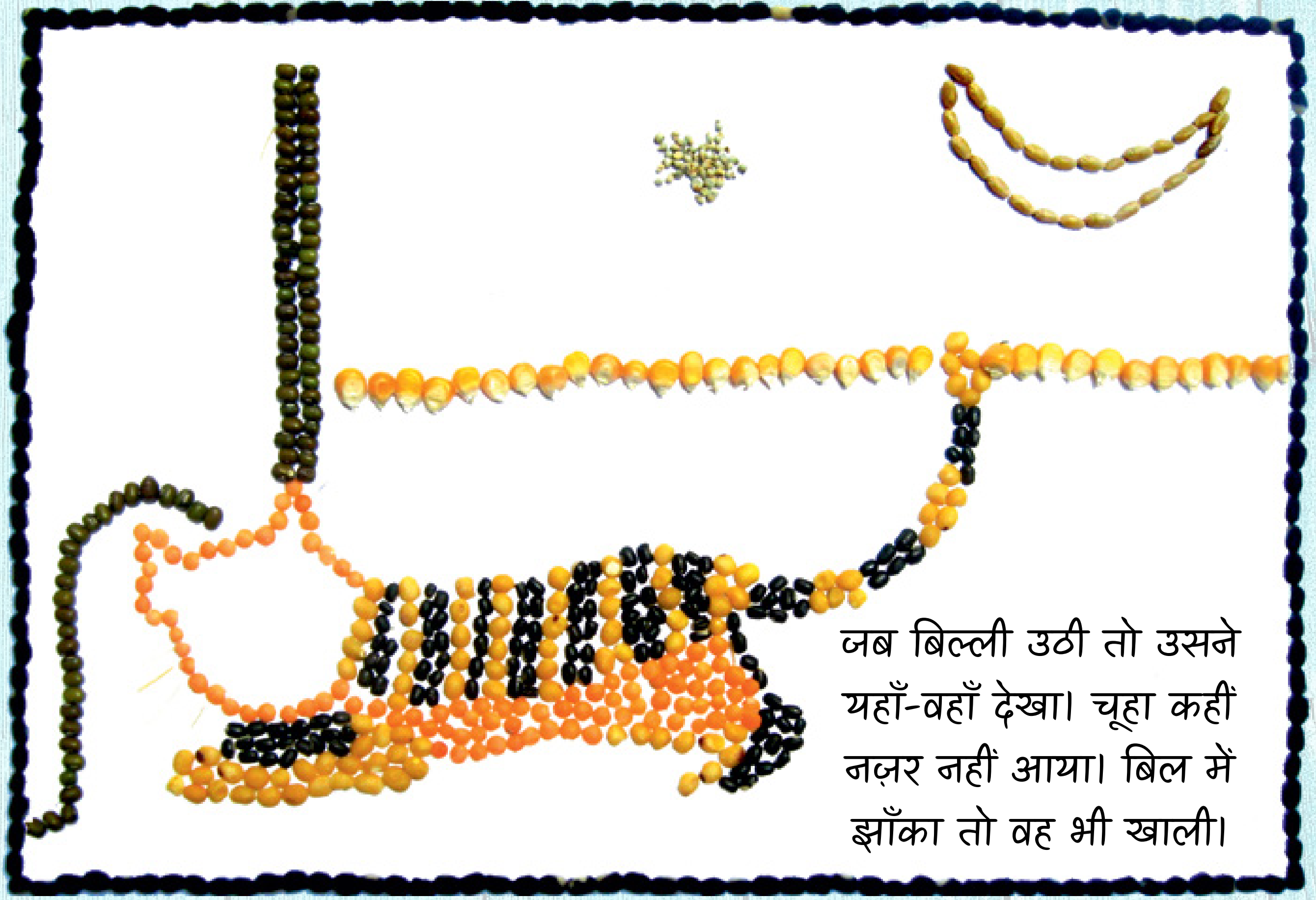
जब बिल्ली उठी तो उसने
यहाँ-वहाँ देखा। चूहा कहीं
नज़र नहीं आया। बिल में
झाँका तो वह भी खाली।

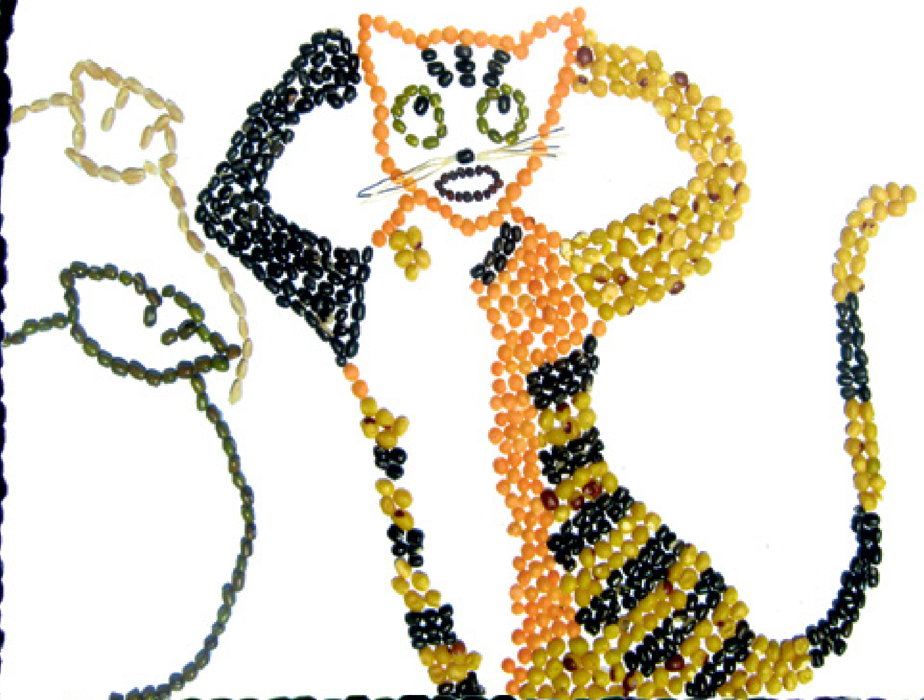

अब बिल्ली को समझ आया कि चूहा तो भाग गया।
बिल्ली सोचने लगी कि अब मुझे खाने को चूहा कब मिलेगा!!

तुम भी बनाओ

जुगाड़ – अलग-अलग प्रकार की दालें और अनाज जैसे - तुअर, खड़ी मूँग, खड़ी उड़द, मसूर दाल, चना दाल, गेंहूँ, बाजरा और कोरा कागज़, पेंसिल, गोंद या फेविकोल

हमारे आसपास ऐसी कितनी ही चीज़ें हैं जिनका उपयोग हम रंगों की तरह कर सकते हैं। जैसे कि चावल का पाउडर, लाल मिट्टी, फूल-पत्तियाँ आदि। बिल्ली और चूहे की इस कहानी के चित्रों में रजनी ने दाल और कुछ अन्य अनाजों का उपयोग किया है। तुम भी कोशिश कर सकते हो।

- सबसे पहले एक कोरा कागज़ लो और उसमें अपनी पसन्द का कोई चित्र बना लो।
- अब पेंसिल से बनी लाइनों पर एक-एक करके ब्रुश की मदद से गोंद लगाओ।
- फिर एक-एक करके लाइनों पर अनाज के दाने चिपकाते जाओ। तुम चाहो तो एक ही चित्र में अलग-अलग रंगों की दालों का उपयोग भी कर सकते हो।

अपने बनाए चित्र हमें ज़रूर भेजना।

बारिश आई

देवांश
चौथी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल
मातली, उत्तराखण्ड

देखो-देखो बारिश आई
घर की तरफ बारिश आई
सूखे कपड़े निकाल दो
घर के अन्दर जाओ
बारिश रुकने तक बाहर मत खेलो
लेकिन तुम टीवी देख सकते हो

चित्र: आस्था, आठवीं, मंगलम पब्लिक स्कूल महादेव, सुन्दर नगर, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

जब हमारे अपने ही हमें डराएँ...

बचपन में हम सब को बड़ों ने कभी ना कभी डराया है। डराने के तरीके और कारण अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन मोटे तौर पर हमें डराने का कारण होता है कि हम बस उनका कहा मान लें। इस अंक के लिए हमने तुमसे ऐसी ही कुछ बातें लिख भेजने को कहा था। बड़ी संख्या में बच्चों से इसके लिए जवाब मिले। कुछ जवाब तुम इन पन्नों में पढ़ सकते हो...

जब मैं छोटी थी तो मेरे पापा और भैया मुझको डराते थे कि बरिया के पेड़ पर भूत है। मैं बहुत डरती थी। जब भी मैं बरिया के पेड़ के पास से गुज़रती थी तो मुझे बहुत डर लगता था। ऐसा लगता था कि भूत मेरा पीछा कर रहा है और मुझे खा जाएगा। मैं आँख बन्द करके वहीं पर बैठकर रोने लग जाती थी। मम्मी मुझे बुलाती थीं पर मैं उनके पास भी नहीं जाती थी। अब मैं जब बड़ी हो गई हूँ तो मुझे पता चल गया है कि बरिया के पेड़ पर कोई भूत नहीं है। पापा मुझे मना करते थे ताकि मैं धूप में ना खेलूँ।

रक्षा, बारह साल, श्याम नगर, मुस्कान संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश

मैं जब छोटा था तो ज़िद करने पर मेरी मम्मी कहती थीं, "देख, काली रात है। अगर तू रोएगा तो तेरी आवाज़ सुनकर भूत आ जाएगा और तुझे उठाकर ले जाएगा।" मैं डरकर चुप हो जाता था। लेकिन अब अगर ज़िद करता हूँ तो माँ भूत को नहीं बुलातीं, बल्कि वह खुद डायरेक्ट ही चप्पल उठाकर मारती हैं।

सूफियान, रोशनी समूह, दिगन्तर, जयपुर, राजस्थान

जब हम दौड़ लगाने जाते थे। तब एक दिन जीजी अकेली दौड़ लगाने सालीमेट की तरफ चली गई। बीच रास्ते में जीजी को पुल के पास भूत दिखाई दिया। भूत रास्ते में दिया जलाकर बैठी थी। फिर जीजी दौड़कर वापिस आ गई। फिर जीजी ने हमें बताया कि रास्ते में पुल के पास भूत मिला था। तुम उधर मत जाना। और दौड़ लगाने भी उधर मत जाना।

आँचल उइके, सातवीं, एकलव्य आवासीय विद्यालय, चिचोली,
ग्राम - चिरमाटेकरी, शाहपुर, मध्य प्रदेश

जब हम छोटे थे तब कई बार हम खाना नहीं खाते थे। तब मम्मी हमें गुस्सा करती थीं और कहती थीं कि एक भूखा शेर यहाँ पर आएगा और तुम्हारा सारा खाना खा जाएगा। और तब भी उसका पेट नहीं भरेगा। क्योंकि शेर तो ज़्यादा खाना खाता है। फिर शेर तुम्हें भी जंगल में उठाकर ले जाएगा और खा जाएगा। फिर हम डरकर खाना खा लेते थे।

जब छोटे बच्चे मुँह में उँगली डालते थे तो उनको मम्मी कहती थीं कि एक बूढ़ा बाबा आकर चुपचाप तुम्हारा अँगूठा काटकर ले जाएगा। फिर वो बच्चे डर के मारे अँगूठा चूसना छोड़ देते थे।

छोटे बच्चे बहुत मासूम और भोले होते हैं। हर चीज़ को सच मान लेते हैं।

अदिति कौण्डल, आठवीं, ब्लू बर्ड हाई स्कूल, चंडीगढ़, पंजाब

ये बात तब की है जब मैं पाँच साल की थी। जब भी मैं अपने पापा को मुर्गा (चिकन) और मछली खाते देखती तो मेरे मुँह में पानी आ जाता। परन्तु मेरे घर में सिर्फ मेरे पापा ही मांसाहारी हैं। मेरे चाचा और मम्मी शाकाहारी हैं। एक दिन मैंने अपना पापा से बोला कि पापा मुझे भी मुर्गा खाना है। वहीं मेरे चाचा खड़े हुए थे। तो मेरे चाचा ने बोला, “नहीं मुस्कान। मुर्गा मत खाओ। वरना वो तुम्हारे पेट में बोलेगा।” मेरे पापा ने बोला, “नहीं बेटा। कुछ नहीं होगा। खा लो।” मैं बेचारी प्यारी-सी जान परेशान हो गई। मैं भ्रमित हो गई कि मुर्गा खाऊँ या नहीं। फिर मेरी माँ आईं और बोलीं, “मुस्कान, क्या हुआ?” बहुत परेशान होकर मैंने सारी बात माँ को बताई। माँ हँसते हुए बोलीं, “अरे! जाओ खा लो।” “पर माँ चाचा ने बोला कि रात को मुर्गा पेट में बोलेगा”, मैंने फिर कहा। “नहीं बेटा कुछ नहीं होगा। जाओ, खा लो”, माँ ने कहा। उस दिन से चिकन मेरा मनपसन्द खाना हो गया है।

अंजलि, छठवीं, के के एकेडमी, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

मैं अपने घर में सबसे छोटी हूँ। मुझको सब लोग डराते हैं। एक भाई है मुझसे छोटा। यहाँ तक कि वो भी मुझे डराता है। बड़े तो बड़े होने के दम पर डराते हैं कि मैं तुमसे बड़ा/बड़ी हूँ। तुम्हें मुझसे ऊँची जुबान में बात नहीं करना चाहिए। चाहे फिर मैं सही होऊँगी या गलत।

और मुझसे छोटा मुझे इस तरह डराता है कि अगर तूने डाँटा या मारा तो मैं मम्मी-पापा से बोल दूँगा। तुझे तो मेरा खयाल रखना चाहिए, फिर चाहे मैं तुझे मारूँ या कूटूँ।

दीक्षा, आठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

जब मैं छोटी थी तो कई बार घरवाले यह कहकर डराते थे कि टीचर से तुम्हारी शिकायत कर देंगे।

निहारिका, आठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

चित्र: खुशबू मेहरा, आठवीं, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

मैं जब छोटी थी तो मेरी मम्मी मुझे पापा के नाम से डराती थीं। एक बार की बात है। दशहरे की रात थी। मैं जहाँ रहती हूँ वहाँ एक अंकल भी रहते थे। उनके लड़के ने रावण बनाया था। उन्हें अचानक मज़ाक करने की सूझी। वो छत पर गए। और फिर नीचे आकर उन्होंने मेरे घर का दरवाज़ा खटखटाया। मैंने जैसे ही दरवाज़ा खोला उन्होंने रावण को मेरे सामने कर दिया। मैं डर गई और ज़ोर-से चिल्लाई।

सलोनी चौहान, दसवीं, केरला पब्लिक स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

मैं जब छोटा था तो मेरे चाचा मुझे कहते थे कि काले कलर की चिड़िया ने तुम्हारी नाक देख ली तो वो तुम्हारी नाक तोड़कर ले जाएगी। तो मैं नाक को ढँककर बाहर जाता था।

ललित, पाँचवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, बाड़मेर, राजस्थान

मेरी मम्मी मुझे सटाके वाले से डराती थीं। क्योंकि मुझे सटाके की आवाज़ से डर लगता था। मुझे लगता था कि वह छोटे बच्चों को भी मारता है। इसीलिए जब मेरे महल्ले में सटाके वाला आता था तो मैं इधर-उधर छुप जाती थी। एक दिन जब मेरे महल्ले में सटाके वाला आया उस समय मैं मैदान में खेल रही थी। मैं दौड़कर घर की तरफ जा रही थी तो रास्ते में मेरी पैंट गीली हो गई थी।

संजीवनी, पाँचवीं, श्याम नगर, मुस्कान संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश

“अरे! तुम्हें पता है तुम कचरे के डिब्बे में पाए गए थे।” अक्सर लोग मुझे यह कहकर डराते थे।

मैं तो यह बात भूल गया था। पर मेरी बहन को याद था। उसने गूगल खोला और दो लोगों की तस्वीर निकाली। फिर बोली, “तनिष्क ये तुम्हारे मम्मी-पापा हैं।” मैं बहुत ही डर गया और मैंने अपने असली मम्मी-पापा को ढूँढ़ने की सोचा। जैसे ही मैं रोते-रोते घर के बाहर जाने लगा, वैसे ही मम्मी-पापा ने समझाया और कहा, “ताहा झूठ बोल रही है। हम ही तुम्हारे मम्मी-पापा हैं।”

फिर इस बात की कभी चर्चा नहीं हुई। पर जब मुझे ताहा से ज़्यादा डाँट पड़ती है तो मैं सोचता हूँ कि मुझे कचरे के डिब्बे से तो नहीं उठाया?

तनिष्क, सातवीं, सरदार पटेल विद्यालय, दिल्ली

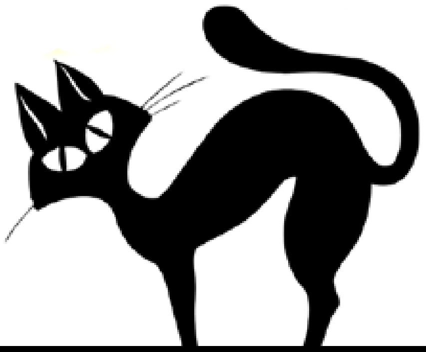

मेरी मम्मी मुझे यह कहकर डराती थीं कि किसी के घर कोई चीज़ नहीं खानी चाहिए। क्या पता खाने में कुछ मिलाया हुआ हो। वो कुछ हमारा दिमाग सटका देता है और हम जानवरों की तरह हो जाते हैं। मैं बहुत डरती थी और किसी के यहाँ कुछ भी नहीं खाती थी। अब सब खाती हूँ।

अंजलि, दसवीं, राजकीय इंटर कॉलेज, केवर्स, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

जब मैं छोटी थी तो मेरे बड़े भाई इमरान का दोस्त बिट्टू मुझे कीड़ों से डराता था। वह अपने हाथ पर अल्लाह घोड़ा टिड्डा रखकर मुझे दिखलाता और मेरे पीछे दौड़ता और कहता था कि टिड्डा, टिड्डा रयाना ने खाजा। मैं बुरी तरह डर जाती थी और बिट्टू खूब हँसता था।

रयाना, महल समूह, दिगन्तर, जयपुर, राजस्थान

जब मैं छोटा था तब मेरा भाई मुझे यह कहकर डराता था कि तू मेरा यह काम कर दे, नहीं तो मैं तेरे पीछे कुत्ते लगा दूँगा। मैं कुत्ते से बुरी तरह डरता हूँ।

सचिन, मेंहदी समूह, दिगन्तर विद्यालय, जयपुर, राजस्थान

जब मैं छोटी थी तो मैं फोन बहुत देखती थी। एक दिन मेरी मम्मी ने मुझे एक वीडियो दिखाया। उसमें एक पागल बच्चा था। मम्मी ने कहा कि अगर मैं बहुत फोन देखूँगी तो मैं भी ऐसी हो जाऊँगी। उससे मुझे बहुत डर लगता था।

अवनि सिंह, तेरह साल, मंज़िल संस्था, दिल्ली

हम लोग बहुत हल्ला कर रहे थे तो हमारी बहन निशा ने हमको रात में बुलाया और डुकरिया वाली कहानी सुनाई। बोली, “चाँद से एक डुकरिया उतरेगी और तुम्हें डराएगी। इसलिए तुम हल्ला मत करो।” हम जब भी मस्ती करते वो एक कहानी सुनाती और डराती थी

कविता चिचाम, पाँचवीं, शाहपुर, मध्य प्रदेश

जब मैं सोती नहीं थी तब मेरे मम्मी-पापा जू-जू बाबा की कहानी सुनाया करते थे। कहते थे जल्दी सो जाओ नहीं तो जू-जू बाबा आ जाएगा और अँधेरा कर देते थे। यह सुनकर मैं सो जाती थी। सुबह उठने के बाद जू-जू बाबा घर चला जाता था और मम्मी-पापा मुझे स्कूल छोड़ देते थे।

देवस्या, तीसरी, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

चित्र: हिमाक्षी भट्ट, पहली, डॉ वीरेन्द्र स्वरूप पब्लिक स्कूल, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

जब मैं छोटा था तो बड़े मुझे डराते थे कि जब तुम बड़ी क्लास में जाओगे तो फेल हो जाया करोगे। हर दिन शिक्षकों से डाँट खाया करोगे। यह भी बताते थे कि पढ़ाई बहुत मुश्किल होती है। परन्तु मैं तो अच्छे-से लिख-पढ़ पाता हूँ और मेरे शिक्षक मुझे अच्छे-से, प्यार से समझाते हैं।

अंकित, दसवीं, दीपालया लर्निंग सेंटर, संजय कॉलोनी, दिल्ली

चित्र: सिमरन असवाल, आठवीं, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

जब मैं छोटी थी तो मेरी मम्मी मुझे सुलाने के लिए कहतीं कि जल्दी से सो जा। नहीं तो सीटी वाले बाबा आएँगे और तुझे ले जाएँगे। यह सुनकर मैं जल्दी-से आँखें बन्द कर लेती और चुपचाप सो जाती थी। पर जब मैं थोड़ा बड़ी हुई तो मुझे पता चला कि वो हमारी सोसाइटी के वॉचमैन अंकल हैं जो सीटी बजाते हैं। कोई सीटी वाला बाबा नहीं है।

लावण्या कंसल, चौथी, सेंट पॉल स्कूल, दिल्ली

जब मैं 3 साल का था तब मैं आँगनवाड़ी जाता था। एक दिन मैं खाना खाकर आँगनवाड़ी से भाग गया। मेरी मम्मी ने बोला, “भागकर क्यों आया?” मैंने कुछ नहीं बोला और खेलने लगा। फिर थोड़ी देर में मम्मी ने आवाज़ दी, “मनोज, इधर आ।” मैंने बोला, “मैं नहीं आऊँगा।” नविना के घर तरफ से नविना के नाना जी आ रहे थे। मेरी मम्मी नविना के नाना जी को देख लीं और मुझे डरा दीं। मैं नविना के नाना जी से पहले बहुत डरता था। मम्मी बोलीं, “मनोज वो देख दुबड़ी वालो बाबा आ रहा है। मैं डरकर घर के अन्दर भाग गया।”

मनोज धुर्वे, पाँचवीं, शासकीय प्राथमिक शाला, सेल्दा, शाहपुर, मध्य प्रदेश

मेरा पन्ना

मेरी डायरी का एक पन्ना

टी. एम. सहाना
सातवीं, डीपीएस इंटरनेशनल स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

कल एक बहुत अच्छा दिन था। मेरे घर के छोटे बगीचे में दो छोटे कबूतर के चूज़ों का जनम हुआ! मैंने ऐसा कुछ कभी नहीं देखा था। इसे देखकर मैं बड़ी खुश हो गई।

एक-दो साल पहले हमने कुछ पेड़-पौधे घर लाकर एक छोटा-सा बगीचा बनाया था। और मुझे अब याद आ रहा है कि पन्द्रह दिन पहले एक कबूतरी हमारे पौधों के बीच बैठकर कुछ लकड़ी के टुकड़े, पत्ते और घास एक खाली गमले पर जमा करने लगी थी। हमने पहले उसको हटाने की कोशिश की, लेकिन वह वहीं बैठी रही। फिर हमने उसे गमले में रहने दिया और उसके सामने थोड़े अनाज और एक कटोरी भर पानी छोड़ते गए।

उसे धूप और बारिश से बचाने के लिए हमने पौधों के ऊपर एक कपड़ा बिछाया, जिससे उसको छाँव मिले। अचानक एक दिन हमने देखा कि कबूतरी ने दो छोटे, सफेद अण्डे दिए थे। अब मुझे सारी बात समझ आई। कबूतरी माँ बनने वाली थी! कबूतरी सुबह-शाम अण्डों के ऊपर बैठी रही, हिली तक नहीं। हमारे अनाज के दानों के साथ-साथ एक दूसरा कबूतर कभी-कभी उसे खाना दे जाता था। मैं बेसब्री से अण्डों के सेने का इन्तज़ार कर रही थी।

आखिरकार वह दिन आज आ ही गया। कल दोपहर, जब मैं खाना खाने बैठी, तब तक सिर्फ कबूतरी और दो अण्डे दिखे। पर जब मैं खाना खाके अन्दर जाने वाली थी, तब मैंने देखा कि कबूतरी के साथ दो नन्हे, पीले रंग के चूज़े बैठे थे! रूई के गोलों की तरह प्यारे और नरम चूज़ों को देखकर मैं झूम उठी। मैं देखना चाहती हूँ कि कब यह बच्चे बड़े होकर अपने माँ की तरह दिखेंगे और उड़ेंगे भी। मैंने उनका नाम भी रखा है; राधा और कान्हा!

चित्र: आस्था, आठवीं, मंगलम पब्लिक स्कूल महादेव, सुन्दर नगर, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

अन्तर ढूँढ़ो

चित्र: कृषिता हनीष जैन, पाँचवीं,सेंटर पॉइंट स्कूल, ढाबा, नागपुर, महाराष्ट्र

मीरा की चिट्ठी

चित्र व लेख: झीलम पात्रा, छठवीं, सरदार पटेल विद्यालय, दिल्ली

कुछ साल पहले की ही बात है। मीरा और मैं एक ही कक्षा में पढ़ते थे। वह मेरी सबसे अच्छी दोस्त थी। हम साथ खेलते थे, साथ-साथ खाते थे। हमारी शायद ही किसी बात पर टोकाटोकी हुई हो। हमारी दोस्ती की सुनहरी कहानी तो कहने लायक है।

स्कूल में मेरा पहला दिन था। उसी दिन प्रार्थना सभा में मैंने मीरा को पहली बार देखा था। ना जाने क्यों मुझे उसमें एक सच्चे दोस्त की छवि दिख रही थी। उन दिनों मुझे हर किसी से एक अजीब-सा डर लगा रहता था। किसी से भी ठीक से बात नहीं कर पाती थी।

फिर भी मैं उसके पास गई और पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है?" "मीरा", उसने कहा। "और तुम्हारा?" "झी-झी झीलम। आ.. आज मेरा पहला दिन है यहाँ।" उसने कहा, "तुमने हमारा पूरा स्कूल देखा? पता है यहाँ तरह-तरह की जगहें हैं। तैराकी की जगह है, उद्यान है, खेलने के लिए तीन विशाल मैदान हैं। वैसे तुम इतनी चुपचाप क्यों हो?"

मैं इसी प्रश्न का उत्तर देने के लिए ना जाने कब से इन्तज़ार कर रही थी। मैंने पूरी बात बताई। मेरे पिछले स्कूल में मुझे हिन्दी नहीं आती थी। मेरी मातृभाषा बांग्ला है। वही एकमात्र भाषा है जो मुझे आती थी। इसलिए ना मैं किसी से बात कर पाती और ना कोई मुझे अपने समूह में लेता। मैं अकेली रह जाती। इस कारण मेरे मन में एक डर बैठ गया। मीरा कुछ नहीं बोली। मेरी बातों को सुन मानो वो किसी सोच में पड़ गई हो। मुझे दोस्ती भरी नज़रों से देखते हुए एकाएक वह बोली, "हाथ मिलाओ दोस्त।"

दोस्ती का यह धागा दिन पर दिन मज़बूत होता रहा। कभी भी कोई एक अनुपस्थित होता तो बेचैनी हमारा मन घेर लेती।

दो साल पहले की बात है। मीरा बहुत दिनों से ज़्यादातर वक्त शिक्षक-शिक्षिकाओं के साथ बातचीत में बिताती। शायद ही कभी वह कक्षा में रहती। रोज़ उसके माता-पिता स्कूल आते। स्कूल की छुट्टी के बाद भी उसके माता-पिता शिक्षक-शिक्षिकाओं से घिरे किसी बातचीत में व्यस्त रहते। मीरा कन्धे पर बस्ता लिए हुए चारों ओर देखती।

3 अगस्त का दिन था। मैंने कई दिनों बाद उसे प्रार्थना सभा में देखा, उसी जगह पर जहाँ मैंने उसे पहली बार देखा था। मैंने उससे पूछ ही डाला कि बात क्या है। उसने कहा, "मैं जा रही हूँ।" "कहाँ?" "अफगानिस्तान।" "इस बार विदेश जा रही हो घूमने?" उसकी आँखों में आँसू भर आए। "नहीं, घूमने नहीं। पापा का तबादला हो गया है। चार साल के लिए अफगानिस्तान में। उसके बाद किसी और देश में हो जाएगा। पता नहीं दोबारा मिलेंगे या नहीं।" मैं स्थिर हो गई। मेरे हाथ-पैर ठण्डे पड़ गए। मेरी आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी।

30 सितम्बर का दिन था। मीरा का स्कूल में आखिरी दिन। सबकी आँखों में आँसू थे। पर मेरी आँखों में नहीं। मैं उसे खुशी-खुशी विदा देना चाहती थी। छुट्टी के वक्त हम दोनों गले मिले। फिर अलविदा कहा। मीरा की टैक्सी आ गई थी। "आओ मीरा, देर हो रही है", उसकी माँ कहे जा रही थीं। मीरा टैक्सी में बैठ गई। मैं हाथ हिलाते

हुए तब तक टैक्सी की ओर देखती रही जब तक वह आँखों से ओझल ना हो गई।

रोज़ सुबह मैं सबसे पहले पोस्ट बॉक्स की जाँच करती हूँ। रोज़ वह तरह-तरह के विज्ञापनों और पत्रिकाओं से भरा होता है। मैं हमेशा उलट-पुलटकर एक चिट्ठी की खोज करती हूँ।

आज भी इसीलिए मैंने पोस्ट बॉक्स खोला। पर नहीं, आज नहीं। आज एक भी विज्ञापन या पत्रिका नहीं थी। सिर्फ एक चिट्ठी थी। पर अजीब बात यह थी कि लिफाफे पर ना कोई नाम, ना ही कोई पता था। मैंने उसे खोला। उसमें लिखा था:

प्यारी झीलम,

आज दो साल बाद बात हो रही है। हमारे यहाँ पर काफी बुरी हालत है। तालिबानों ने जंग छेड़ रखी है। रोज़ सौ-सौ लोग मारे जाते हैं। हम भी शायद मारे जाएँगे। शायद कोई नहीं बचेगा। अभी कुछ ही देर में तालिबान लोग आएँगे। पड़ोस में कुछ घर जला दिए जाएँगे। बचने का कोई रास्ता नहीं है। हाँ, सुना है कि हर देश के उच्च विभाग से लोग आ रहे हैं अपने देशवासियों को ले जाने। भारत के उच्च विभाग के बारे में भी सुना है। पर अभी तक हमारे इलाके में इस बारे में कोई खबर नहीं है। ना जाने हमारे भाग्य में क्या लिखा है। संचार के सभी साधन बन्द हैं। हम घरों में बैठे यही सोचते हैं कि आज ज़रूर इस दुनिया में हमारा आखिरी दिन है। आज ना जाने क्यों, तुमसे बात करने को जी चाहा। मुझे याद है वो स्कूल के दिन, वो मस्ती-मज़ा। तुम्हें यह चिट्ठी लिख रही हूँ। पता नहीं तुम्हें मिलेगी या नहीं।

तुम्हारी दोस्त

बस इतना ही। वह चिट्ठी अभी भी मेरे हाथों में है। मेरे हाथ काँप रहे हैं।

मैं जानती हूँ यह चिट्ठी किसने लिखी है। मेरा पन्ना

चित्र: आमना शेख, आठवीं, महाराष्ट्र

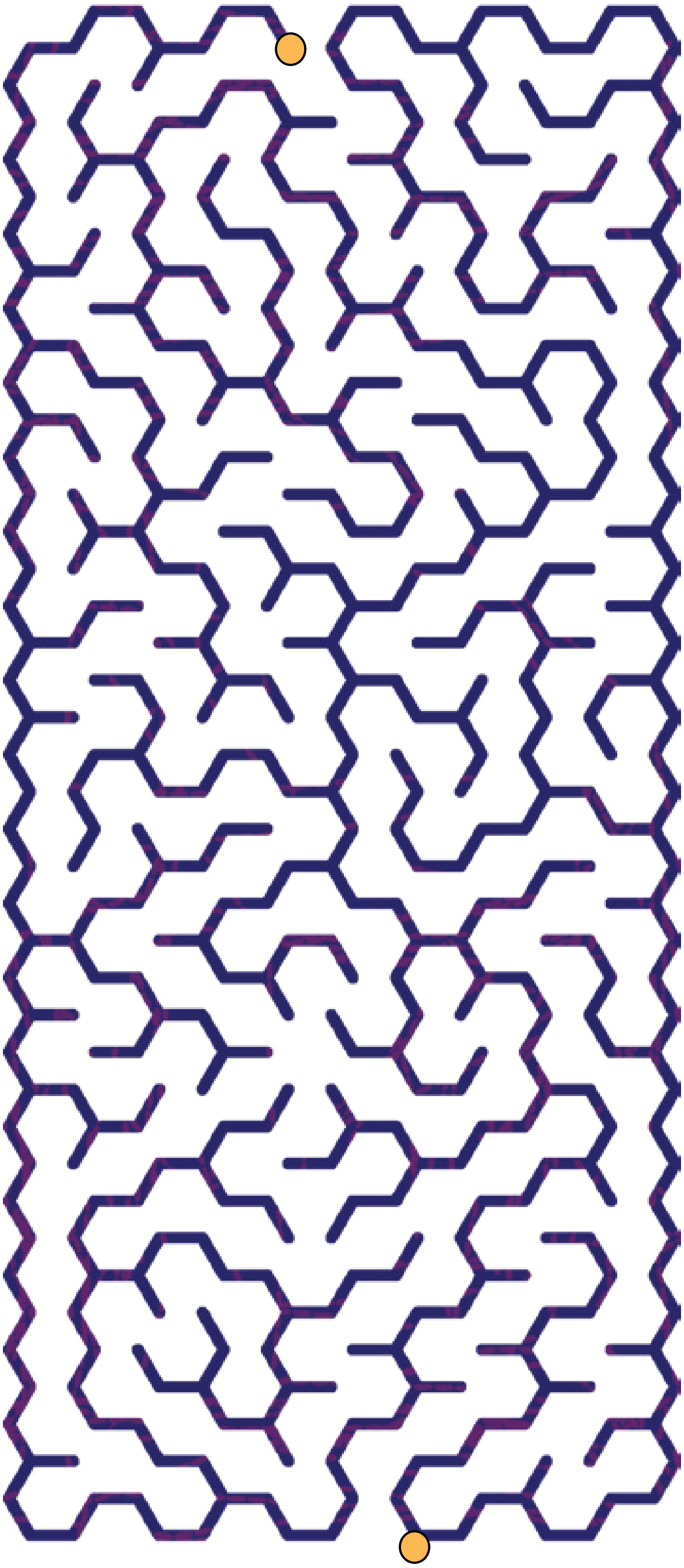

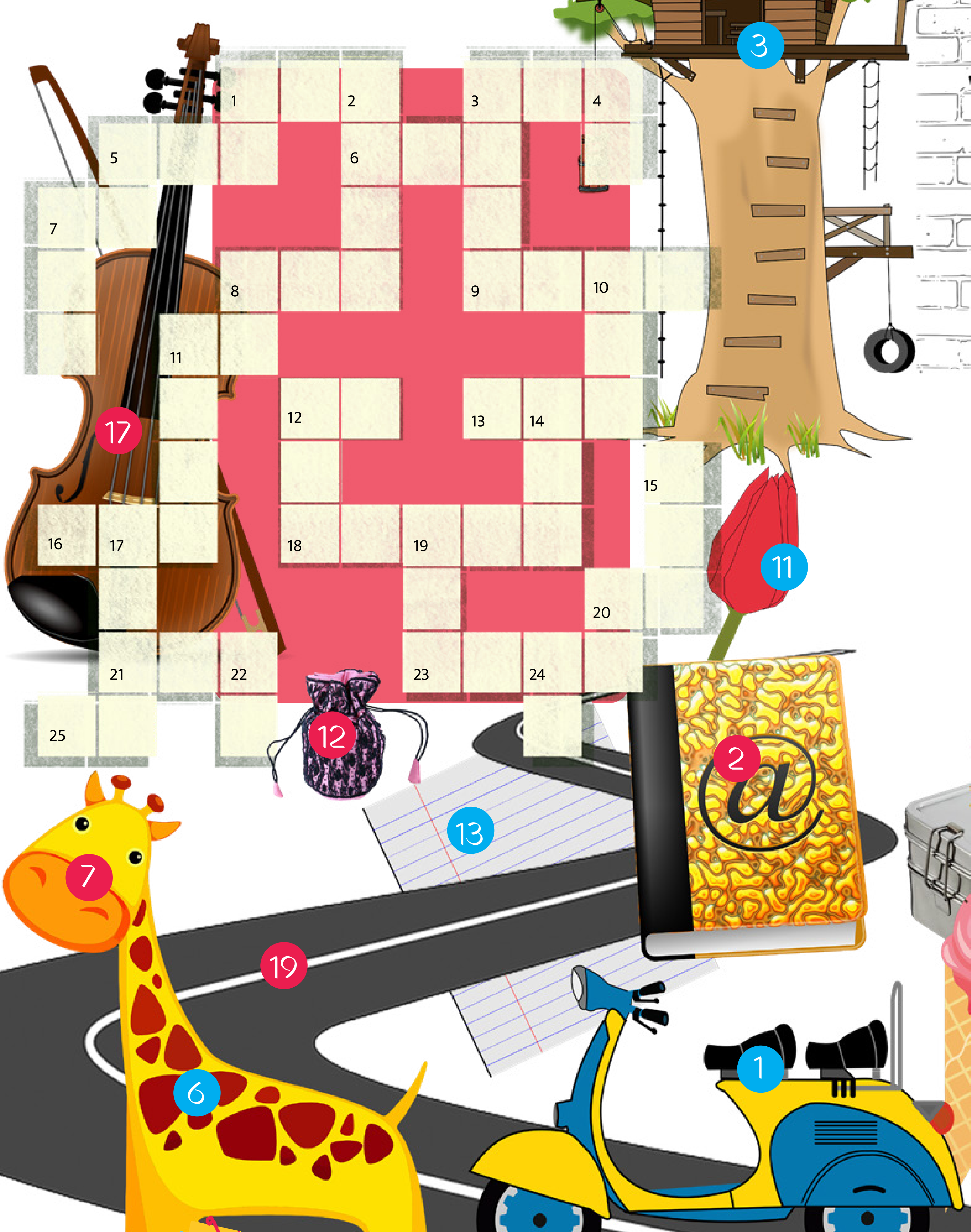

बाएँ से दाएँ
ऊपर से नीचे
चित्र
पहेली
Leh
Manali
SCHOOL
5
4
24
16
10
3
20
8
7
21
25
14
9
22
23
8
15
18
12
20
5
11
1

माथापच्ची जवाब

1.

27

5.

2. अर्शी व रेहान दोनों की बातों को मिलाकर देखो तो सारा का जन्मदिन 18 दिसम्बर के बाद और 20 दिसम्बर से पहले पड़ता है। यानी कि जन्मदिन 19 दिसम्बर को होगा।

3.

22+ 2/2 = 23

6.

पहाड़ी

7.

042

4.

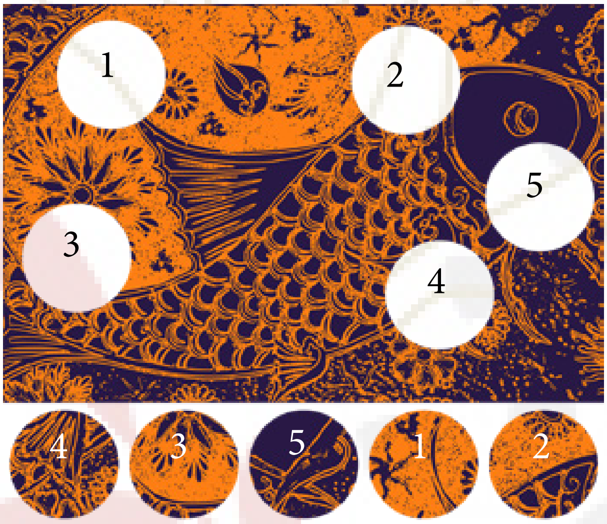

अन्तर ढूँढ़ो का जवाब

अक्टूबर की चित्रपहेली का जवाब

1 बाँ	2 स		3 कौ		4 प	5 र	च	6 म
	7 फे	री	वा	8 ला		द्दी		ह
9 गें	द			10 इ	स्त्री		11 ब	ल्ला
दा		12 ल	प	ट			द	
	13 लौ	ह		14 र	15स	भ	री	
16 धू		17 रि	म		पा			18 प
19 प	20हि	या		21 बै	ट	22री		र
	सा			न		23 ल	24 बा	दा
	25 ब	रा	ब	र			ड़ा	

सुडोकू-47 का जवाब

8	2	9	4	5	3	1	6	7
1	6	7	8	9	2	4	5	3
5	4	3	6	1	7	2	8	9
6	7	1	2	4	5	9	3	8
3	9	4	7	6	8	5	1	2
2	8	5	1	3	9	7	4	6
7	1	2	5	8	6	3	9	4
4	3	6	9	2	1	8	7	5
9	5	8	3	7	4	6	2	1

चित्र: आयुष चौधरी, आठवीं, घुमारवीं, बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23

मेरा पन्ना रचनाओं से बनी किताबें...

जब से चकमक शुरू हुई तब से बच्चों की रचनाएँ 'मेरा पन्ना' कॉलम में छपती आ रही हैं — कविताएँ, किस्से, कहानियाँ, चित्र...हमने इन रचनाओं से 13 किताबें बनाई हैं।

बाल दिवस का स्पेशल ऑफर

13 किताबों का सेट सिर्फ ₹~~899~~ ₹750 में!

ऑफर केवल 30 नवम्बर 2021 तक!!

सेट ऑर्डर करने के लिए इस लिंक पर जाएँ—

https://www.pitarakart.in/Mera-Panna-Rachnao-Se-Bani-Kitaben

या हमें फोन करें - 0755 2597 7770-71-72-73

प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।

सम्पादक: विनता विश्वनाथन